

Dr. Priti Ranjan

H. O. D history department

H. D jain college, ara

Notes for ug sem v

पल्लव कालीन संस्कृति का वर्णन

पल्लव वंश दक्षिण भारत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण राजवंश था, जिसने चौथी से नवमी शताब्दी ईस्वी तक तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के कुछ भागों पर शासन किया। पल्लवों की राजधानी कांचीपुरम थी, जो उस समय भारतीय संस्कृति, शिक्षा, धर्म और कला का प्रमुख केंद्र बन गया था। पल्लव काल को दक्षिण भारत के **संस्कृति-विकास का स्वर्ण युग** कहा जाता है।

नीचे पल्लव कालीन संस्कृति का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत है—

1. धर्म और दर्शन

- पल्लव शासक मुख्यतः **हिन्दू धर्म** के अनुयायी थे। प्रारंभिक पल्लव वैष्णव थे, जबकि बाद के शासक विशेष रूप से **शैव धर्म** को मानने लगे।
- उन्होंने विष्णु, शिव, दुर्गा आदि देवताओं के लिए अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण कराया।
- धार्मिक सहिष्णुता भी विद्यमान थी—बौद्ध और जैन धर्म को भी संरक्षण प्राप्त था।
- **महेंद्रवर्मन प्रथम** ने पहले जैन धर्म अपनाया था, बाद में शैव मत की ओर झुकाव हुआ।
- **कांचीपुरम** बौद्ध, जैन और वैदिक दार्शनिक विचारों का संगम स्थल था।

2. वास्तुकला

पल्लव कालीन वास्तुकला भारतीय मंदिर स्थापत्य का आधार बनी। इसे दो प्रमुख चरणों में बाँटा जाता है—

(क) शैल-कटक (Rock-cut) चरण

- इस चरण की शुरुआत **महेंद्रवर्मन प्रथम** (600-630 ई.) के काल में हुई।
- इस शैली में पहाड़ों को काटकर गुफा-मंदिर बनाए गए।

- उदाहरण:
 - *महेंद्रवर्मन की गुफाएँ*—मंडगप्पट्टू, महाबलीपुरम, त्रिचिनापल्ली आदि।

(ख) मंदिर स्थापत्य (Structural temples) चरण

- यह शैली **नरसिंहवर्मन प्रथम (महेंद्रवर्मन का पुत्र)** और उसके उत्तराधिकारियों के समय विकसित हुई।
- सबसे प्रसिद्ध उदाहरण **महाबलीपुरम (ममल्लपुरम)** के मंदिर और रथ हैं—जैसे *पंच रथ*, *शोर मंदिर* आदि।
- पल्लवों ने दक्षिण भारत में पत्थर के मंदिरों की परंपरा आरंभ की, जिसे बाद में चोलों ने आगे बढ़ाया।

3. मूर्तिकला और चित्रकला

- पल्लव काल की मूर्तियाँ अत्यंत सजीव और भावपूर्ण हैं।
- महाबलीपुरम के '**अर्जुन तपस्या**' या '**गंगा अवतरण**' जैसे विशाल शिलाचित्र विश्व प्रसिद्ध हैं।
- इन मूर्तियों में देव-देवियों, ऋषियों, पशुओं, मनुष्यों आदि का अत्यंत यथार्थ चित्रण मिलता है।
- चित्रकला के अवशेष बहुत कम हैं, परंतु शिलालेखों से पता चलता है कि इस काल में भित्तिचित्र कला भी प्रचलित थी।

4. शिक्षा और साहित्य

- कांचीपुरम इस काल में दक्षिण भारत का **नालंदा** कहलाता था।
- यहाँ **वेद, दर्शन, व्याकरण, तर्कशास्त्र, चिकित्सा** आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी।
- संस्कृत और तमिल दोनों ही भाषाओं में साहित्य की समृद्ध परंपरा विकसित हुई।
- प्रमुख रचनाएँ—
 - *महेंद्रवर्मन* की "**मतविलासप्रहसन**" (संस्कृत नाटक, जिसमें बौद्ध और जैन मतों का व्यंग्य है)।
 - *दंडिन* (जो पल्लव दरबार से जुड़े थे) ने "**दशकुमारचरित**" और "**काव्यादर्श**" लिखी।

5. संगीत और नृत्य

- संगीत और नृत्य पल्लव दरबार की विशिष्ट पहचान थे।
- नृत्यशास्त्र और भरतनाट्यम जैसी परंपराओं को राजाश्रय मिला।
- मंदिरों में नृत्यांगनाएँ (देवदासियाँ) धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेती थीं।

6. समाज और जीवन

- समाज वर्ण-व्यवस्था पर आधारित था, परंतु पेशेवर दृष्टि से विविधता थी।
- स्त्रियों को धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलता था।

- कृषि, व्यापार और समुद्री वाणिज्य का अच्छा विकास हुआ था।
- दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों—जैसे सुमात्रा, जावा, कंबोडिया—से पल्लवों का सांस्कृतिक और व्यापारिक संपर्क था।

7. कला-संरक्षण

- पल्लव शासकों ने कलाकारों, कवियों, मूर्तिकारों और विद्वानों को भरपूर संरक्षण दिया।
- इसी कारण उनके काल में दक्षिण भारतीय कला की पहचान बनी, जिसने चोल, पाण्ड्य और चालुक्य कला को प्रेरणा दी।

निष्कर्ष

पल्लव काल भारतीय संस्कृति के उत्कर्ष का युग था। इस काल में **धर्म, दर्शन, कला, साहित्य, वास्तुकला और शिक्षा**—सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई। महाबलीपुरम की मूर्तियाँ और मंदिर आज भी इस संस्कृति की महानता के साक्ष्य हैं। पल्लवों ने न केवल दक्षिण भारत में बल्कि समूचे दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।